पाठ-सूची

पाठ	पृष्ठ
१—परमेश्वर की लीला (पद्य) [लेखक-पं० श्रीधर पाठक]	१
२—कृष्ण-जन्म [प्रेम-सागर से]	२
३—लेफ्टिनेण्ट मुलर के आरोग्यता सम्बन्धी विचार ['माधुरी' से]	१०
४—शरद-ऋतु-वर्णन (पद्य) [राम-चरित-मानस से]	१८
५—नल-दमयन्ती [लेखक राजा शिवप्रसाद सितारे-हिन्द]	२०
६—गिरधरकी कुण्डलियाँ (पद्य)	३२
७—महाराणा प्रतापसिंह	३५
८—मिताचरण [लेखक पं० बालकृष्ण भट्ट] ...	४२
९—कश्मीर-यात्रा [लेखक बा० केशवप्रसाद खत्री]	४६
१०—कर्मवीर (पद्य) [लेखक पं० अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध']	५७
११—सूरदास जी का जीवन चरित्र [लेखक भारतेन्दु बा० हरिश्चन्द्र]	६०
१२—दिल्ली ['छत्तीसगढ़-मित्र' से]	६५
१३—ब्रह्मचर्य	

हिन्दी पाठावली

१—परमेश्वर की लीला

ध्यान लगा कर जो तुम देखो सृष्टी की सुघराई को ।
बात बात में पाओगे उस ईश्वर की चतुराई को ॥
ये सब भाँति भाँति के पक्षी ये सब रंग रंग के फूल ।
ये वन की लहलही लता नव ललित ललित शोभा के मूल ॥
ये नदियाँ ये झील सरोवर कमलों पर भौंरों की गुञ्ज ।
बड़े सुरीले बोलों से अनमोल पक्षी कूजें की कुञ्ज ॥
ये पर्वत की उच्च शिखा की शोभा कठिन पहाड़ अपार ।
निर्मल जल के सोते झरने शोभा सहित महा विस्तार ॥
छै प्रकार की ऋतु का होना नित्य नवीन शोभा के संग ।
पावस बादल घनगरजनि चपला का चमकना बहु रंग ॥
चाँद सूर्य की शोभा अद्भुत, तारों से शोभित दिन रात ।
त्यों अनन्त आकाश मण्डल से सब उत्तम रचना का ज्ञात ॥
यह समुद्र का भूमण्डल पर दूना जो अनन्त विस्तार ।
इसमें है मेघों के कारण होते अगणित उपज अपार ॥

लाये और जला जला, डुबो डुबो, पटक पटक, दुख दे दे
को मार डाला। इसी रीति से छोटे बड़े भयावने भाँति
के भेष बनाये, नगर नगर, गाँव गाँव, गली गली, घर घर
खोज लगे मारने और यदुबंसी दुख पाय पाय देस छोड़
जी ले ले भागने।

किसी समै बसुदेव की जो और स्त्रियाँ थीं, सो भी रोहनी
मथुरा से गोकुल में आईं, जहाँ बसुदेव जी के परम
नन्द जी रहते थे। तिन्हों ने अति हित से आसा भरोसा
रक्खा। वे आनन्द से रहने लगीं। जब कंस देवताओं
को सताने और अति पाप करने लगा, तब विष्णु ने अपनी
आँखों से एक माया उपजाई, सो हाथ बांध सनमुख आई।
से कहा—तू अभी संसार में जा औतार ले मथुरापुरी
बीच, जहाँ दुष्ट कंस मेरे भक्तों को दुख देता है और कश्यप
अदिति–जो बसुदेव देवकी हो ब्रज में गये हैं, तिन को मूँद
रक्खा है। छः बालक तो तिन के कंस ने मार डाले, अब
सातवें गर्भ में लछमन जी हैं, उन को देवकी की कोख से
निकाल गोकुल में ले जाकर इस रीति से रोहनी के पेट
में रख दीजो कि कोई दुष्ट न जाने, और सब वहाँ के लोग
जस बखानें।

इस भाँति माया को समझा श्रीनारायन बोले कि तू तो
ले जाकर यह काज कर के नन्द के घर में जन्म ले, पीछे
बसुदेव के यहाँ औतार ले मैं भी नन्द के घर आता हूँ। इतना

जड़ित आभूषन पहिरे, चतुर्भुज रूप किये, शंख, चक्र, गदा, पद्म लिये बसुदेव देवकी को दरसन दिया। देखते ही अचम्भे हो तिन दोनों ने ज्ञान से बिचारा तो आदि पुरुष को जाना, तब हाथ जोड़ बिनती कर कहा—हमारे बड़े भाग जो आप ने दरसन दिया और जन्म मरन का निबेड़ा किया।

इतना कह पहिली कथा सब सुनाई जैसे जैसे कंस ने दुख दिया था। वहाँ श्रीकृष्णचन्द बोले—तुम अब किसी बात की चिन्ता मत करो, क्योंकि मैं ने तुम्हारे दुख के दूर करने ही को औतार लिया है। पर इस समै मुझे गोकुल पहुँचा दो और इसी बिरियाँ जसोदा के लड़की हुई है सो कंस को ला दो. अपने आने का कारन कहता हूँ सो सुनो।

नन्द जसोदा तप कर्यो, मोही सों मन लाय।
देख्यो चाहत बाल सुख, रहौं कछू दिन जाय॥

फिर कंस को मार आन मिलूँगा, तुम अपने मन में धीर धरो। ऐसे बसुदेव देवकी को समझाय श्रीकृष्ण बालक बन रोने लगे और अपनी माया फैला दी, तब तो बसुदेव देवकी का ज्ञान गया और जाना कि हमारे पुत्र भया। यह समझ दस सहस्र गाय मन में संकल्प कर लड़के को गोद में उठा छाती से लगा लिया, उस का मुँह देख देख दोनों लम्बी साँसें भर भर आपस में लगे कहने—जो किसी रीति से इस लड़के को भगा देवें तो कंस पापी के हाथ से बचे। बसुदेव बोले—

कहीं उनका सिर काट नहीं, ऐसी खोपड़ी भी देखी जहाँ।
कन्या हूँ यहाँ की कुशल नहीं, तुमने तो देवकी प्रसन्न हो बोली—
हे दयानी हमें चाहे अब मार डाले तो भी कुछ चिन्ता नहीं,
क्योंकि हम दुष्ट के हाथ से छूट तो गया।

इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेव जी राजा परीक्षित से कहने लगे कि जब वसुदेव लड़की को ले आये तब किवाड़ ज्यों के त्यों भिड़ गये और दोनों ने हथकड़ियाँ बेड़ियाँ पहन लीं। कन्या रो उठी, रोने को सुन सुन पहरू जागे तो अपने अपने शस्त्र ले ले सावधान हो लगे तुपक छोड़ने जिस का शब्द सुन लगे हाथी चिंघाड़ने, सिंह दहाड़ने और कुत्ते भौंकने। तिसी समय अँधेरी रात के बीच पहरवालों ने जा कंस के आगे हाथ जोड़ कंस से कहा—महाराज तुम्हारा वैरी जन्मा। यह सुन कंस मूर्छित हो गिरा।

प्रश्न

१) कृष्ण, वसुदेव, देवकी और कंस कौन थे?
२) कंस ने कृष्ण को क्यों मारना चाहा?
३) [illegible] के बचने में कैसे विघ्न हुए? लिखो।

में कर मान लेना चाहिये। यदि हम चाहें तो वंश-परम्परागत बीमारियों को भी रोक सकते और अपने शारीरिक दोषों को भी दूर कर सकते हैं।

बहुत से लोग बीमारी या दुर्बलता को भाग्य की बात समझ कर हाथ पर हाथ रक्खे बैठे रहते हैं और उन से बचने का प्रयत्न नहीं करते। पर यह बड़ी नासमझी की बात है। ईश्वर हमें पीड़ित करने को बीमारियां कदापि नहीं भेजता। वास्तव में वे हमारे कर्मों का ही फल हैं। उनकी ज़िम्मेदारी और किसी पर नहीं, केवल हमीं पर है।

प्राचीन ग्रीस के प्रसिद्ध चिकित्सक हिप्पाक्रेटीज़ ने यह स्पष्ट कहा है कि बीमारी अचानक आ पड़ने वाली कोई वस्तु नहीं है, वह हमारे दैनिक कृत्यों का ही दैनिक परिणाम होती है। प्रति दिन प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करते करते जब हमारे अपराध की सीमा पूर्ण हो जाती है, तभी प्रकृति देवी का कोप हमारे सिर पर वज्रपात की तरह फट पड़ता है।

खान-पान के असंयम तथा अशुद्ध वायु के दिन रात सेवन करने से ही हमारी अधिकांश बीमारियां उत्पन्न होती हैं। शरीर के आरोग्य को क़ायम रखने के लिये प्रति दिन थोड़ा व्यायाम करना, नित्य स्नान करना तथा चौबीस घण्टे में सात आठ घण्टे तक सोना अत्यन्त आवश्यक है। जो इन नियमों का पालन नहीं करते, उनके बीमार होने में

ऊपरी वस्त्र (जैसे कोट, पाजामा इत्यादि) यदि ऊन के हों तो कोई हानि नहीं।

दाँत, मुख इत्यादि की रक्षा

दाँतों को साफ़ रखना आरोग्यता के लिये अत्यन्त आवश्यक है। भोजन के बाद दाँतों को खूब धोना चाहिये, जिस से उन में खाद्य पदार्थों के छोटे छोटे टुकड़े न लगे रह जावें। आवश्यकतानुसार दँतखुदनी से भी काम लेना चाहिये। इसके सिवाय चौबीस घण्टे में कम से कम एक दफ़े दाँतों को कूँची से खूब साफ़ करना चाहिये। रात को सोते समय ऐसा करना अधिक लाभदायक होगा। सुबह मुँह तथा जीभ को खूब साफ़ करो। थोड़े से जल में ज़रा सा नमक मिला दो, फिर उस पानी को गले तक ले जा कर बाहर निकाल दो। इस से गला भी खूब साफ़ हो जायगा। साल में एकाध दफ़े अपने दाँत किसी को दिखा लिया करो, जिस से मालूम होता रहे कि कोई दाँत सड़ने तो नहीं लगा। यदि दाँत हिलने या सड़ने लगे या उस में कीड़ा लग जाय तो उस का तुरन्त इलाज करो।

नींद

प्रत्येक मनुष्य को चौबीस घण्टे में कम से कम आठ घंटे अवश्य सोना चाहिये। कम सोने से बहुत हानि होती है— शरीर क्षीण होता है, और जीवन शक्ति घटती है। कम सोने वाले मनुष्य [illegible] नहीं [illegible] हो जाते हैं

भाग राजा नल का वृत्तान्त है, जो आगे लिखा जाता है। राजा नल का एक भाई था, जिसका नाम पुष्कर था। उसी के साथ वे पाँसे का खेल खेला करते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि धीरे धीरे दाँव लगाते लगाते राजा नल सारा राज्य हार गये। एक धोती को छोड़ उनके पास कुछ भी न बचा। वे दमयन्ती को साथ ले घर से निकले। दमयन्ती ने बुद्धिमानी का काम कर लड़के लड़की को पहिले ही अपने पिता के घर भेज दिया था। निष्ठुर-हृदय पुष्कर ने अपने राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई राजा नल को अपने घर में आश्रय देगा, उसे प्राण-दण्ड दिया जायगा।

राजा नल को तीन दिन और रात, अन्न तो अन्न, जल तक पिये बिना ही व्यतीत करने पड़े। अन्त में वे कन्द मूल एवं फलों से अपना और रानी का पेट भर दिन व्यतीत करने लगे। वन के कष्टों को देख राजा नल ने दमयन्ती को समझा बुझा कर पिता के घर जाकर रहने का आग्रह किया, क्योंकि दमयन्ती बड़ी सुकुमारी थी। किन्तु दमयन्ती ने नल को ऐसे संकट में छोड़ कर स्वयं राज[illegible] रहना स्वीकृत न किया और कहा—"हे प्राणनाथ! [illegible] से ऐसा कठोर वचन [illegible]कर निकला? आप [illegible] के घर में [illegible] ने क्या मैं अधि[illegible] [illegible] [illegible] के दर्शन-सुख से [illegible] आप [illegible] त्याग [illegible]

र न देख दमयन्ती का
निर धुन कर विलाप
आंसुओं की धारा बह
निरन्तो की ओर पुकार
मैंने कौन सा अपराध
न छोड़ आप चल दिये?
भूल गये ? उस समय
ओ हम तुम से अलग
व विलम्ब न लगाइये
रीजिये।" दमयन्ती का
अचर तक विकल हुए।
कर न आये, तब उसके
और रोती और विलपती
गी। इतने में अचानक
लिया और चाहा कि
मयन्ती का चिल्लाना सुन
उस विपत्ति से बचाया
नाम कर दिया। अज-
तो वह सारे सांसारिक
ी उसके भाग्य में अनेक
इतनी उहरी पर्याकर
के लिये उस अजगर

ने कहीं पद पद पर कष्टदायी हुआ। तब अन्य उपाय न देख, दमयन्ती ने सर्वव्यापी एवं सर्वान्तर्यामी भगवान् को स्मरण कर प्रार्थना की। दमयन्ती आर्त स्वर से कहने लगी—"हे दीन दयालो! हे अनाथों के नाथ! हे दया-सिन्धो! हे अशरण-शरण! हे वात्सल्य गुण-सागर! इस दुष्ट के हाथ से मेरी रक्षा कीजिये।" भगवान् बड़े बड़े दानी एवं यज्ञ करनेवाले राजा महाराजों की उपेक्षा भले ही कर डालें और उन्हें कर्म बन्धन से मुक्त न करें, किन्तु दयामय भगवान् भक्तों के आर्त्तनाद की अवहेलना नहीं करते और भक्तों के कर्म बन्धन को तुरन्त काट देते हैं। "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" का नियम भगवद्भक्तों के लिये नहीं है। ये नियम उन लोगों की उन्नति में बाधक हैं जो अपने पुरुषार्थ पर निर्भर होकर ज्ञान अथवा कर्म काण्ड द्वारा उसके समीप पहुँचने का प्रयत्न किया करते हैं। जैसे राजा के विशेष कृपापात्रों के लिये कोई नियम नहीं है, वैसे ही उन भगवद्भक्तों के लिये, जिनको दयामय भगवान् ने अपना लिया है, कोई नियम नहीं। दमयन्ती की करुणा भरी प्रार्थना सुन, भगवान् का कोमल हृदय दया से आर्द्र हो गया और उन्होंने दमयन्ती के उद्धार का उपाय भी तुरन्त ही रच दिया।

जब बहेलिये ने देखा कि दमयन्ती उसका कहना नहीं मानती, तब वह उस पर क्रुद्ध हुआ और उस को मारने के लिये बाण चलाया। पर वह बाण दमयन्ती को न लगा,

उस पानी ही को लगा और वह जहाँ का तहाँ गिर गया और मर गया। तदनन्तर दमयन्ती हाथी, सिंह आदि बनैले हिंसक जन्तुओं से अपने आप को बचाती और अनेक पहाड़ों और जङ्गलों में भटकती सुबाहु नगर में पहुँची। वहाँ वह रानी के पास दासी बन कर समय व्यतीत करने लगी। संयोगवश उसे ढूँढते हुए उसके पिता के भेजे ब्राह्मण सुबाहु नगर में आ निकले और उसे विदर्भ नगर को लिवा ले गये।

उधर राजा नल घूमते फिरते अयोध्या पहुँचे और अपना नाम बाहुक रख, वहाँ के राजा ऋतुपर्ण के सारथी बन कर रहने लगे। विदर्भ-राज ने राजा नल को खोजने के लिये नगर नगर गाँव गाँव ब्राह्मण भेजे। उन में से एक ब्राह्मण ने अयोध्या से लौट कर, यह समाचार सुनाया कि राजा ऋतुपर्ण का बाहुक नामक सारथी, दमयन्ती का नाम सुन कर उदास हुआ और आँखों में आँसू भर लाया। बहुत पूछने पर भी उसने अपना परिचय नहीं दिया। यह सुन कर दमयन्ती को निश्चय हो गया कि बाहुक बन कर राजा नल ही अयोध्या में दिन काट रहे हैं। दमयन्ती ने अपने पिता से कह कर राजा ऋतुपर्ण के पास सँदेसा भेजा। वह यह था कि अब राजा नल के आने की आशा जाती रही, अतः दमयन्ती दूसरा वर ग्रहण करेगी और इस के लिये दूसरी स्वयम्वर सभा होगी। उस सभा में आप भी पधारें।

किन्तु स्वयम्वर का दिन इतना समीप नियत किया कि

दमयन्ती, पतिव्रता होकर, पर पुरुष के साथ विवाह करना चाहती है! क्यों न हो! ये सब दिनों का प्रभाव है। मनुष्य के खोटे दिनों में उसका निज शरीर जब उसका साथ नहीं देता, तब स्त्री और सन्तान का कहना ही क्या है।" इस पर केशिनी ने कहा—

"हे बाहुक! क्या तुम राजा नल का भी कुछ पता जानते हो? ज़रा सोचो, राजा नल ने दमयन्ती के साथ कैसा निष्ठुर व्यवहार किया! उस सोती हुई अबला को बियाबान वन में अकेली छोड़ न जाने वे किधर चल दिये। दमयन्ती को देखो, वह कैसी भली है कि इस पर भी उसने कुछ ध्यान न दिया और वह अन्न जल छोड़ कर सदा उनका नाम लिया करती है।"

दमयन्ती का हाल सुन कर, बाहुक से न रहा गया और उसकी आँखों से अश्रु प्रवाहित होने लगा। अन्त में बाहुक ने कहा—

"स्त्री भले ही पति द्वारा सताई जाय, पर औरों के सामने उसे पति की बुराई करना उचित नहीं। दमयन्ती को कदाचित् यह बात नहीं मालूम कि यदि राजा नल दमयन्ती को वन में न छोड़ जाते, तो उनके प्राण बचने कठिन थे। तिस पर भी यदि राजा नल से निर्दयता का कोई काम बन भी पड़ा हो, तो दमयन्ती की शोभा इसी में है कि वे उनका अपराध क्षमा करें; क्योंकि दुःख पड़ने पर मनुष्य की बुद्धि का ठीक रहना कठिन है।"

[illegible] हुए और फिर दोनों [illegible]
[illegible] कहा और [illegible]
[illegible] सुनते ही [illegible]
[illegible] है। [illegible]
[illegible] और इस बार [illegible]
[illegible] अब दोनों को, [illegible]
[illegible] और [illegible]
[illegible] बहुत दिनों [illegible]
[illegible]

वैसा ही स्वाद था, जैसा राजा नल के बनाये पदार्थों में होता था।

तदनन्तर दमयन्ती अपनी माता के पास गई, और बोली-"माँ जी! यदि आज्ञा हो, तो मैं अश्वशाला में जाकर उनसे मिल आऊँ।" माता ने बेटी को तुरन्त आज्ञा दी। दमयन्ती तिस पर भी अकेली न गई और अपने साथ अपने बेटे बेटी को लेती गई। राजा नल को और उनके जर्जरित क्षीणकाय को देख दमयन्ती रोने लगी। जब वह सावधान हुई, तब राजा नल से बोली—"प्राणनाथ! मुझ अबला को आप वन में अकेली छोड़ क्यों चल दिये?" इस प्रश्न के उत्तर में लज्जित हो राजा नल ने कहा—

"क्या तुम को विश्वास है कि मैंने जान बूझ कर तुम्हारा साथ छोड़ा? सच तो यह है कि जिस निर्बुद्धि में पड़ कर, मैंने सारा राजपाट गँवाया, उसी के फेर में पड़ तुम्हारा भी बिछोह हुआ। तुम्हारे बिछोह में मुझ पर जो बीती, उसे मेरा यह शरीर ही जान सकता है। किन्तु जो पतिव्रता होती हैं, वे स्वामी में अवगुण देख कर भी उसकी निन्दा नहीं करतीं। जाने भी दो; अब इन बातों में क्या रक्खा है, क्योंकि कल तो तुम दूसरे की हो ही जाओगी।"

दमयन्ती ने हाथ जोड़ कर कहा—"आप को यहाँ बुलाने के लिये ही यह सारा जाल रचा गया था। क्या आप को विश्वास हो गया कि मैं दूसरे के साथ विवाह कर लूँगी?

(४)

साईं अवसर के पड़े को न सहै दुख द्वन्द।
जाय बिकाने डोम घर वै राजा हरिचन्द॥
वै राजा हरिचन्द करैं मरघट रखवारी।
धरे तपस्वी भेष फिरे अर्जुन बलधारी॥
कह गिरधर कविराय तपै वह भीम रसोई।
को न करै घटि काम परे अवसर के साईं॥

(५)

साईं सब संसार में मतलब का ब्यौहार।
जब लगि पैसा गाँठ में तब लगि ताको यार॥
तब लगि ताको यार यार संगही संग डोलै।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहिं बोलै॥
कह गिरधर कविराय जगत को याही लेखा।
करत बेगरजी प्रीति यार हम बिरला देखा॥

(६)

रही न रानी केकई अमर भई यह बात।
कवन पुरबले पाप ते बन पठयो जगतात॥
बन पठयो जगतात कंत सुरलोक सिधारेउ।
जेहि सुत काजे मरेउ राउ नहिं बदन निहारेउ॥
कह गिरधर कविराय भई यह अकथ कहानी।
यश अपयश रहि गयउ रही नहिं केकइ रानी॥

(१०)

साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये कोय।
तब लग मन में राखिये जब लग कारज होय॥
जब लग कारज होय भूलि कबहूँ नहिं कहिये।
दुर्जन ताते होय आप सीरे ह्वै रहिये॥
कह गिरधर कविराय बात चतुरन के ताईं।
करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं॥

प्रश्न—

१—नीचे लिखे शब्दों के अर्थ लिखोः—

उद्दण्ड, विरथा, कन्त, कागद, पौरिया।

२—दसवीं कुण्डलिया का सारांश अपने शब्दों में लिखो।

७—महाराणा प्रतापसिंह

भारतवर्ष में चित्तौड़ का राजवंश वीरता के लिए प्रसिद्ध है। सैकड़ों वर्ष तक बड़ी बड़ी आपत्तियाँ पड़ने पर भी यहाँ के राजाओं ने किसी शत्रु के सामने सिर नहीं झुकाया। शूरता, निर्भयता और दृढ़ता में इस घराने के राजाओं की तुलना संसार के किसी भी बड़े आदमी से की जा सकती है। इसी कुल में संवत् १५९६ में महाराणा उदयसिंह के यहाँ प्रतापसिंह का जन्म हुआ था।

हुत सेना लेकर हल्दी घाटी के मैदान में उस का सामना
या। इस युद्ध में राजपूतों ने जो वीरता दिखाई वह इति-
स में अमर रहेगी। दोनों ओर के नामी नामी सेनापति
त रहे और कहा जाता है कि अकबर के ५० हज़ार और
तापसिंह के चौदह हज़ार योद्धा इस में काम आए। प्रताप-
ह अपने प्राणों का मोह छोड़ कर शत्रु सेना को चीरते हुए
ागे बढ़ गए और उन के सरदार और सिपाही भी उन के
ीछे रहे। राणा के शरीर में बहुत से घाव लगे और उन का
यारा घोड़ा भी इसी युद्ध में मारा गया। एक बार राणा के
ाणों पर अनिवार्य संकट देख कर झाला वंश के एक राजा ने
नका छत्र अपने ऊपर लगा लिया जिस से शत्रुओं ने उन्हीं
ो राणा समझ कर एक साथ आक्रमण कर के उन का काम
माम कर दिया। आज तक भी राजपूत लोग हल्दी घाटी
 युद्ध का बड़े गौरव के साथ स्मरण करते हैं और चारण
ौर भाट अनेक प्रकार के पदों में वह का गान करते हैं।

यद्यपि अकबर की सेना का बहुत संहार हुआ था तथापि
ागरे से सेना मँगा कर उस की पूर्ति कर ली गई। राज-
ूतों की संख्या कम रह जाने के कारण वे अपनी मातृ-भूमि
की रक्षा न कर सके। तब भी उन्हों ने अाधीनता स्वीकार कर-
ने की अपेक्षा बन-बन मारे-मारे फिरना स्वीकार किया। इस
प्रकार प्रति दिन युद्ध करते हुए और अपनी रक्षा के लिए
बार बार स्थान बदलते हुए प्रतापसिंह ने २५ वर्ष व्यतीत

हुआ हुआ। उस समय उन्होंने अकबर की आधीनता स्वीकार करने का निश्चय कर के अपने दूत द्वारा सम्राट् की सेवा में पत्र भेजा।

इस समाचार से आगरे में सनसनी फैल गई। जिस राजवंश ने अब तक किसी राजा के सामने सिर नहीं झुकाया उसी का सब से वीर पुरुष अचानक अब हमारा जागीरदार होना स्वीकार करता है, यह सोचकर अकबर के आनन्द का पार नहीं रहा। मुगलों की राजधानी आगरे में बड़ा उत्सव मनाया गया और बादशाह ने एक बड़े दरबार में उस दूत का स्वागत किया। परन्तु इस से कुछ राजपूतों को बहुत खेद हुआ। बीकानेर के राजा के भाई पृथ्वीराज ने अकबर के सामने इस बात पर अविश्वास प्रकट किया कि प्रताप सिंह अकबर के दरबार में अपना दूत भेजेंगे। उन्हों ने कहा कि इस में कुछ भेद है। और इस की जांच करने के लिए बादशाह की आज्ञा प्राप्त की।

घर जाकर उन्होंने प्रताप सिंह को एक मर्म-भेदी पत्र लिखा जो इतिहास में प्रसिद्ध है और जिस की पंक्तियां आज भी बड़े गौरव के साथ पढ़ी जाती हैं। उस का भावार्थ इस प्रकार है—अकबर का शासन घोर अंधकार के समान है जिस में सब लोग सो गए हैं। केवल एक प्रतापसिंह ही अपने पहरे पर जागृत हैं। अकबर ने एक बार ही सब संसार को दागी कर दिया है, बिना दागा हुआ सवार केवल राणा

[illegible] विल्बर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उन्होंने कहा कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

धारण की सार्थकता का सम्पादन करता है और ऐसे अव-
सर उचित आचरण वही दिखा सकते हैं जिन की आन्तरिक
पाद सभी प्रकार की पूंजी सर्वथा सुस्थिर हो और शनैः
बढ़ती रहती हो । वह योग्यता जिस में न हो, वह
ारण जन-समुदाय में भी गणनीय नहीं है। इस लिये
की प्राप्ति के लिये पाठक-गण को चाहिये कि शरीर के
ी अवयवों और मन की सभी शक्तियों से काम लेते रहा
; पर उतना ही जितने में अधिक थकावट न हो। अन्न
ादि में व्यय भी इतना ही किया करें जितना सामर्थ्य के
नर्गत हो। दूसरों के साथ व्यवहार बर्ताव भी इतना ही
ा करें जितना सर्वदा निभ सके। अपनी वाणी और
ो भी ऐसा ही रक्खा करें जैसा कुल की मर्यादा के विरुद्ध
र लोक-समुदाय को अप्रिय न हो। बस, ऐसा ध्यान बना
बने और अभ्यास करते रहने से मिताचारी और सञ्जीव-
धिकारी होनेमें कोई संशय न रहेगा और आवश्यकता के
ुरूप तदनुकूल कार्यों की पूर्ण-कारिणी सामग्री का अभाव
रहेगा।

प्रश्न—

१—मिताचरण किसे कहते हैं और उसकी क्या उपयोगिता है ?

२—नीतिनिति, पौराणसन्द, सञ्जीवनाधिकारी इन शब्दोंके अर्थ लिखो।

यहाँ का प्रसिद्ध बाज़ार महाराज गञ्ज है। यह कलकत्ते के बड़ेबाज़ार जैसा बना है। इस स्थान में सौदागरी की प्रायः सब प्रकार की वस्तुएँ मिलती हैं। विशेष कर भ्रमण करते अङ्गरेज़ों तथा मेमों की अच्छी भीड़-भाड़ रहा करती है और बहुत से दलाल भी यहाँ घूमा करते हैं जो अपनी टूटी फूटी अङ्गरेज़ी बोल विदेशियों के पीछे लग जाया करते हैं।

श्रीनगर जैसा नदी तट पर बसा हुआ है, यदि बनारस के जैसे भारी भारी घाट यहाँ होते तो ठीक काशी ही सी छटा दिखलाई देती। परन्तु यह कब सम्भव है? तो भी नाव पर जिस समय जाओ उस समय दोनों ओर मकानों की श्रेणी देखने वालों के मन को मोहती है। मेरे अनुमान से ऐसी शोभा भी दूसरे स्थान में कहीं न होगी।

शेरगढ़ी महल के दक्षिण ओर नदी में कुछ दूर तक द्वीप (टापू) पड़ गया है। इस में अनेक चनार के वृक्ष भी हैं। खासा डेरा डाल कर अङ्गरेज़ लोग यहाँ रहते हैं। यह [illegible] में एक ही है। इस की शोभा भी देखने योग्य है। सड़कों पर बाज़ार इस से महाराज गंज तक [illegible] सड़क बन गई है। रात्रि के [illegible] लगती है। [illegible] [illegible] हुए अङ्गरेज़ों [illegible] है।

यहाँ का प्रसिद्ध बाज़ार महाराजगञ्ज है। यह कल-
ते के ढरें पे बना है। इस स्थान में सौदागरी की
सब प्रकार की वस्तुएँ मिलती हैं। विशेष कर सुन्दर
ति अङ्गरेज़ों तथा मेमों की अच्छी भीड़ भाड़ रहा करती है
और बहुत से दलाल भी यहाँ घूमा करते हैं जो अपनी टूटी
फूटी अङ्गरेज़ी बोल विदेशियों के पीछे लग जाया करते हैं।

श्रीनगर झेलम नदी तट पर बसा हुआ है, यदि बनारस
के ऐसे पक्के पक्के घाट यहाँ होते तो ठीक काशी ही की शोभा
दिखलाई देती। परन्तु यह कब सम्भव है? तो भी नाव पर
जिस समय जाओ उस समय दोनों ओर मकानों की श्रेणी
देखने वालों के मन को मोहती है। मेरे अनुमान से ऐसी
शोभा भी दूसरे स्थान में कहीं न होगी।

रज़ीडेन्सी बङ्गले के दक्षिण ओर नदी में कुछ दूर तक
टीला (टापू) पड़ गया है। इस में अनेक प्रकार के वृक्ष भी
हैं। प्रायः डेरा डाल कर अङ्गरेज़ लोग यहाँ रहते हैं। यह
स्थान भी नगर भर में एक ही है। इस की शोभा भी देखने
योग्य है। यहाँ पर मीराक़दल से महाराज गंज तक
एक लम्बी चौड़ी सड़क अब अच्छी बन गई है। रात्रि के
समय पुल के दोनों ओर लालटेनें भी जलती हैं। जालन्धरी
में बारहदरी में कभी कभी महाराज साहब आके
के न्योता देकर भोजन कराते हैं और
जाते हैं।

[illegible] तट पर महाराज साहब का [illegible] इसका नाम बसन्त-बाग है। [illegible] श्रीमहाराज साहब की ओर से [illegible] यहाँ अच्छा उत्सव हुआ [illegible] दान दुखियों तथा भूखों को [illegible] जाता है।

पशमीने का काम।

[illegible] जलवायु की उत्तमता आदि [illegible] काश्मीर में माना जाता है, उस [illegible] हाथ की अनेक प्रकार की उत्तम उत्तम वस्तु बनाने वा[ले] [illegible] शाल का काम ही देखा बड़ा बढ़ा है कि [illegible] समता न कर सके। औरों [illegible] आज कल इस [illegible] में [illegible] इन काश्मीरी जुलाहों [illegible] तात्पर्य यह है कि अनेक प्रयत्न करने [illegible] काश्मीरी शालों की समता न कर पाये। [illegible] नहीं [illegible] प्राचीन काल से काश्मीर [illegible] कारीगरों के लिए [illegible] से बढ़ा चढ़ा है।

काश्मीरी शाल काश्मीरी बकरियों के नरम [illegible] रोओं से बनते हैं। जितना उत्तम रोआँ होगा, उ[तना] उत्तम शाल बनेगा। प्रत्येक बकरी के अङ्ग पर से [illegible] आध पाव [illegible] अधिक रोआँ नहीं मिलता। [illegible]

बहुमूल्य होता है। एक तो थोड़ा होता है, दूसरे इसे बनाने में बड़ा परिश्रम और व्यय होता है। पहिले तो चुन कर रोयें कतरते हैं, फिर साफ़ कर उसे कातते हैं। अनन्तर यह रङ्गा जाता है।

दुशाले भी कई प्रकार के होते हैं। पहले तो हलके और कोमल सादे ऊन के। ये ही बहुमूल्यवान हैं। दूसरे पक्के रङ्गमें रंगे जाते हैं। तीसरे पश्मीने के, जिन के पर्दे और खेमे तथा बिछावने बनते हैं। क्रमशः इन का मूल्य भी घटता जाता है। जिन लोगों ने देखा है वे ही कह सकते हैं कि ऊन के कतरने बनाने रंगने और बिनने में कितना परिश्रम करना पड़ता है और समय लगता है।

दुशालों के पहिले छोटे छोटे टुकड़े होते हैं। फिर पीछे वे जोड़े जाते हैं। जिस स्थान में दुशाले बनते हैं, वे भी देखने ही के योग्य हैं।

काश्मीर की उपज।

यहाँ की पृथिवी बड़ी उपजाऊ है, विशेष कर फलों के लिये तो बड़ी ही उत्तम है। यहाँ सेव, नाशपाती, बीही, बोशावगू, अंगूर आदि बड़े ही स्वादिष्ट फल उत्पन्न होते हैं और अधिक होने के कारण बहुत सस्ते भी होते हैं। इन के सिवाय अनार, अखरोट, बादाम भी बहुत होते हैं और सस्ते बिकते हैं—जैसे हमारे यहां मूली, गाजर, आम, अमरूद धनी निर्धन मनमाने खाते हैं, वैसे ही ऊपर कहे फल वहाँ के

इ का पता नहीं लगा। यह कीली राजा चन्द्र की बनवाई है
ौर सदा के लिये उस की अमर कीर्ति को प्रकाशित करती है।
ीली पर श्लोक खुदे हैं। उन से यह सब विदित होता है।
न श्लोकों का यह अर्थ है:—

"जिस का यश खड्ग रूपी लेखनी से लिखा है, जिस ने
वङ्गदेश में अपने शत्रुओं के समूह को युद्ध में बारम्बार परा-
जित किया, जिस ने सिन्धु नदी के सात मुखों को पार कर के
ाह्लीकों को लड़ाई में जीता, जिस का यश रूपी वायु आज
क दक्षिण समुद्र को सुगन्धित कर रहा है, जिस ने इस
पृथ्वी को छोड़ स्वर्ग में वास किया, जो अपने सुकृतों से प्राप्त
ोक को देह रूप से गया है परन्तु यश रूप से पृथ्वी में
स्थित है, जिस के प्रचण्ड प्रताप ने वन की शान्त ध्वनि के
सदृश पृथ्वी को अभी तक नहीं छोड़ा है, जिस ने अपने बचे
हुए शत्रुओं का नाश किया, जिस ने पृथ्वी पर अपने भुज बल से
उपार्जित अतुल राज्य बहुत दिनों तक किया है, जिस का
मुख पूर्णिमा के सदृश दमक रहा है, उस चन्द्र नामक राजा
ने विष्णु में ध्यान धर विष्णुपदगिरि में भगवान विष्णु की
यह ध्वजा स्थापित की है।"

इन श्लोकों से जान पड़ता है कि राजा चन्द्र की विष्णु
भगवान् में परम भक्ति थी। जहाँ अब कीली वर्तमान है,
वहाँ उस के समीप पहिले विष्णुपदगिरि नामक एक पहाड़ी
थी जिस पर विष्णु भगवान का एक बड़ा भारी मन्दिर

मुसलमानों का राज्य होगा। राजा ने क्रोध कर के उसे निकलवा दिया। वह अजमेर चला गया। जहाँ उस का बड़ा सन्मान हुआ।

खड़्गराय कवि जो शाहजहाँ बादशाह के समय में हुए थे, इस कीली का वृत्तान्त और कुछ लिखते हैं। उन का मत यह है कि व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रथम राजा अनंगपाल को एक पचीस अंगुल की लम्बी कीली दी और उन से कहा कि आप इसे पृथ्वी में गाड़िये। शुभ संवत् (सन् ३६५ ई०) वैशाख बदी तेरस को राजा ने इस कीली को पृथ्वी में गाड़ दिया। तब व्यास पण्डित ने कहा कि अब तुम्हारा राज्य अचल हो गया क्योंकि यह कीली शेषनाग के माथे में गड़ी है। जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उस की बात का विश्वास न कर कीली उखड़वा डाली पर देखा तो उस में लोहू लगा था। राजा ने डर कर ब्राह्मण को फिर बुलवाया और कीली फिर गाड़ने की आज्ञा दी। परन्तु कीली उन्नीस अंगुल तक ही पृथ्वी में गई और ढीली रह गई। तब ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारा राज्य इस कीली के सदृश अस्थिर रहेगा और उन्नीस पीढ़ी तक राज्य रहेगा फिर पीछे चौहान वंश के हाथ में आवेगा और उन के पीछे मुसलमानों के अधिकार में चला जायगा। वैसा ही हुआ। अनङ्गपाल के वंश में उन्नीस पीढ़ी तक ही राज्य रहा। कुछ लोग यह कहते हैं कि इस कीली के ढीली रह जाने से इसका नाम ढिल्ली अर्थात् दिल्ली पड़ गया।

[illegible] स्थान [illegible] सुन्दर और अनुपम बने [illegible] है। [illegible] का विस्तार [illegible] है [illegible] ऊपर लिखे हुए स्थानों के [illegible] बाग, अशोक का [illegible], [illegible] का महत्त्व। [illegible] अनेक स्थान [illegible] को इन सब [illegible] की राजधानी है और [illegible] है।

[illegible]

[illegible] — [illegible], [illegible],

[illegible] — [illegible]

[illegible] है [illegible] में [illegible] कि इस [illegible] प्रताप से [illegible] सकता है। [illegible]

[illegible] पहले आँख खुलते ही शय्या त्याग देना चाहिए [illegible] पर पड़े रहने से मन में विकार उत्[illegible] में बहुत देर करके भी नहीं सो[illegible] आयु के अनुसार साधारणतया सात या आ[illegible] बिछौना बहुत मुलायम और ओढ़ने [illegible] बहुत भारी नहीं होने चाहिए। प्रतिदिन नियमित रूप [illegible] बहुत लाभदायक होता है।

[illegible] रहन सहन के सादे होने की आवश्य[illegible] आदि की सफ़ाई का ध्यान अव[illegible] रखना चाहिए परन्तु तड़क भड़क और सजावट का [illegible] सादा जीवन और उच्च विचार के सत्य को ही सम[illegible] चाहिए।

इस [illegible] सफलता के लिए ब्रह्मच[illegible] एक मुख्य साधन है। [illegible] हमारे शास्त्रकारों ने ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों में ब्रह्मचर्य को प्रथम स्थान दिया है। ब्रह्मचर्य के बिना और आश्रमों [illegible] धर्मों का ठीक तरह से पालन नहीं हो सकता।

यद्यपि ब्रह्मचर्य का मुख्य काल विद्यार्थी जीवन है तो भी और आश्रमों में भी ब्रह्मचर्य के ऊपर लिखे नियमों का यथासम्भव पालन करना धर्म है। इसलिए जिन विद्यार्थियों का विवाह हो गया हो उन्हें भी इस में शिथिल हो जाना नहीं चाहिए। मन [illegible] अपनी धुन में मस्त हो कर [illegible] निरन्तर प्रयत्न करें

रहना चाहिए, क्योंकि यह वह धर्म है जिस का पालन मनुष्य के लिये सर्वदा कल्याणकर है। "स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।" और इसे छोड़ देने से मनुष्य अपना स्वास्थ्य ही नहीं खो बैठता, अपनी बुद्धि और काम करने की शक्ति से भी हाथ धो बैठता है और अन्त में बिलकुल नष्ट हो जाता है।

हमारे पूर्वज ऋषि मुनियों के कार्य और वर्तमान समय में महापुरुषों के जीवन चरित्र ब्रह्मचर्य के महत्व के प्रमाण हैं। महर्षि अगस्त्य, विश्वामित्र, व्यास और वशिष्ट को कौन नहीं जानता? भीष्म, अर्जुन, अभिमन्यु की कथाओं से कौन परिचित नहीं? इसी प्रकार स्वामी शंकराचार्य्य और श्रीवल्लभाचार्य जैसे धर्म प्रवर्तकों और महाराणा प्रताप और गुरु गोविन्दसिंह जैसे योद्धाओं के चरित्र हमारे जीवन-पथ को प्रकाशित करने के लिए मौजूद हैं। हम भी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपनी शक्ति के अनुसार उन्नति करने का प्रयत्न कर सकते हैं। यदि हम प्रयत्नशील होंगे तो ईश्वर हमारी सहायता करेगा।

प्रश्न—

१—ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है और उसके साधन के क्या उपाय हैं?

१४—छात्राष्टक

[illegible] मर्यादा यह तुम्हारा,
[illegible] नर आत्म-धारा।
[illegible] तुम्हारा मगल मय हो,
[illegible] भी सत्य हो॥

[illegible] जैसा,
[illegible] बल भी वैसा।
[illegible] है बढ़ने का,
[illegible] सिखने पढ़ने का॥

[illegible] तब जीवन है,
[illegible] धन ही धन है।
[illegible] सकते हो,
[illegible] सकते हो॥

[illegible] तुम्हारी,
[illegible]
[illegible] हैं
[illegible]

यही समय है तुम्हें कि प्रस्तुत हो सकते हो,
जगती-तल में पुण्य-बीज तुम बो सकते हो।
संयम पूर्वक रहो, और थोड़ा श्रम कर लो,
भव्य मनो-भाण्डार भाव-रत्नों से भर लो॥

तुम सब जो कुछ रटो कण्ठ तक ही मत रक्खो,
करो उसे हृदयस्थ और उस का रस चक्खो।
हुआ चरित का गठन पठन से यदि न तुम्हारा,
तो तोते की तरह व्यर्थ समझो श्रम सारा॥

महा पुरुष जो हुए तुम्हीं में से थे सारे,
तुम से न्यारे थे न कभी तुम उन से न्यारे।
शंकर, भास्कर, कालिदास अपने को जानो,
लूथर, न्यूटन, शेक्सपियर को भिन्न न मानो॥

शासक, शिक्षक और परीक्षक हैं जो सारे,
बन कर थे भी छात्र हुए हैं मान्य तुम्हारे।
पढ़ो, परिश्रम करो, कभी हिम्मत मत हारो,
बन कर शीघ्र सुयोग्य देश की दशा सुधारो॥

प्रश्न—

-निम्नलिखित पदों के अर्थ लिखो :—
"तन-मन दोनों....बढ़ सकते हो", "यही समय है....भर लो।"
-शंकर, कालिदास, न्यूटन और शेक्सपियर के जीवन चरित्र संक्षेप में लिखो।

अन०—(प्रियंवदा को भेंट कर) हे सखी, यह सुन कर तो मुझे बड़ा आनन्द हुआ ! बड़ा सुख हुआ !! परन्तु अब सोचती हूँ कि शकुन्तला आज ही जायगी तो सुख और दुःख समान हो जाते हैं ।

प्रिय०—यह सुख रहेगा इस से हम को भी कुछ शोक न करना चाहिये ।

अन०—मैं ने इसी दिन के लिए नारियल में जो आम के पेड़ पर लटकता है निन नई नागकेसर की माला रक्खी थी [illegible] उतार ले तब तक मैं मृग रोचन और तीर्थ की मिट्टी और दूब मङ्गल उपचार की सामग्री इकट्ठी करूँ ।

प्रिय०—बहुत अच्छा ।

([illegible] और प्रियंवदा माला उतारती है)

[illegible]) [illegible] शार्ङ्गरव और शारद्वत मिश्रों से कह दो कि शकुन्तला के पहुँचाने को जाना होगा ।

प्रिय०—([illegible]) अनसूया विलम्ब मत कर, हस्तिनापुर जाने वाले ऋषि बुलाये जाते हैं ।

(अनसूया हाथ में सामग्री लिये आती है)

अन०—आओ सखी हम भी चलें ।

दोनों इधर उधर फिरती हैं ।

प्रिय०—(देख कर) यह देखो शकुन्तला सूरज निकलते ही सिर स्नान कर के बैठी है और बहुत सी तपस्विनी हाथ में

कपड़े चाहिये थे ये आश्रम के फूल पत्ते तो इनके [illegible] का है अच्छे नहीं लगते ।

(दो ऋषिकुमार वस्त्राभूषण लिये आते हैं)

दूसरा कुमार—भगवती को ये वस्त्राभूषण पहनाओ ।

[देख कर सब चकित होती हैं]

गौतमी—हे पुत्र नारद ये कहाँ से आये ।

पहिला ऋषिकुमार—पिता कण्व के प्रभाव से ।

गौतमी—क्या मन में विचारते ही प्राप्त हो गये ।

दूसरा ऋषिकुमार—नहीं सुनो, जब महात्मा काश्यप की आज्ञा हम को हुई कि शकुन्तला के निमित्त वृक्षों से फल ले आओ तब तुरन्त—

चौपाई ।

[illegible] मंगलीक शशि सम सित सारी ॥
काहू दियो लाक्षा रस [illegible] । [illegible] चरन महावर होई ॥
[illegible] बहु विध भूषन दीने । वन देविन के हाथन दीने ॥
[illegible] पल्लव [illegible] हाथा । [illegible] लाया ॥

अनसूया—(शकुन्तला को देखकर) वन देवियों से वस्त्राभरण [illegible] यह शगुन तुझे सासरे में राजलक्ष्मी का दाता होगा ।

[शकुन्तला लजाती है]

पहिला ऋषिकुमार—भगवन आओ आओ गुरु जी स्नान कर के आ गए, चलो उन से वन देवियों के सत्कार का वृत्तान्त कह दें

ा—अच्छा। [दोनों जाते हैं]

सखी—हे सखी! हम आभूषणों को क्या जानें परन्तु चित्र विद्या के बल से तेरे अंगों में पहना देंगी।

न्तला—मैं तुम्हारी चतुराई जानती हूं।

[दोनों सिंगार कराती हैं]

(कण्व स्नान किये हुए आते हैं)

दोहा।

आज शकुन्तला जायगी मन मेरो अकुलात।
रुकि आंसु, गद्गद् गिरा आंखिन कछु न सुझात॥
मो से बनवासीन जो इतो सतावत मोह।
तो गेही कैसे सहैं दुहिता प्रथम बिछोह॥

[इधर उधर टहलते हैं]

ोनों सखी—हे शकुन्तला तेरा सिंगार हो चुका, अब कपड़े का जोड़ा पहन ले।

[शकुन्तला उठकर साड़ी पहनती है]

गौतमी—हे पुत्री आनन्द के आंसू भरे नेत्रों से तुझे देखने गुरु जी आते हैं, तू इन्हें आदर से ले।

शकुन्तला—(उठ कर लजाते) पिता, मैं नमस्कार करती हूं।

कण्व—हे बेटी—

दोहा।

तू पति की आदरवती हूजो बर घर जाय।
जैसे सरमिष्ठा भई नृप ययाति घर [illegible]

सोरठा।

पुरुवंशी गुरु नाम, जैसो सुत पायो अन्त्य।
[illegible] अभिराम, ममो ही जनियो सुत ॥

[illegible] यह तो आशीर्वाद क्या है, वरदान है।

[illegible] तुरन्त आहुति दी हुई अग्नियों की प्रद[illegible]

[illegible]। [सब प्रदक्षिणा करती हैं]

[illegible] मंदिरा हा। (चारों ओर देख कर)

[illegible]

[illegible] और शार्ङ्गरव आते हैं)

[illegible]—मुनि [illegible]।

[illegible] अपनी [illegible] का गीत बनाओ।

[illegible] इधर आओ।

[सब चलते हैं]

[illegible] सहगामी [illegible]।

दोहा।

[illegible] नहिं [illegible] तुम को प्याय।
[illegible] पान [illegible] नहीं [illegible] के [illegible] ॥
[illegible] तुम [illegible] आवत है सुखदान।
[illegible] समाति [illegible] करति मह ने ॥
[illegible] यह आनि [illegible] आज [illegible] गेह।
आज्ञा देहु पयान की तुम सब सहित सनेह ॥

[कोयल की बोल [illegible]]

शकुन्तला—([illegible] करती हुई सी) पिता, मैं इस माधवी लता से भी मिल लूं, इस में मेरा बहन का सा स्नेह है।

कण्व—बेटी, मैं भी जानता हूं तेरा इस में सहोदर का सा प्यार है। माधवी लता यह है दाहनी ओर।

शकुन्तला—(लता के निकट जा कर) हे वन-ज्योत्स्ना! यद्यपि तू आम से लिपट रही है तो भी इन शाखा [illegible] मुझ से मिल ले क्योंकि अब मैं तुझ से दूर जा [illegible]

कण्व—

दोहा।

[illegible] लिये मैं सकल्प्यो जाय।

[illegible] अपने पुण्य प्रताप॥

मिली भली नवमल्लिका यह आम सँग जाय।

[illegible] तुम देखूं न मैं निश्चिन्त उपाय॥

[illegible] मन कर अब विदा हो।

शकुन्तला—([illegible]) हे सखियो! इसे मैं तुम्हारे हाथ [illegible]

[illegible] सौंपती हो।

[illegible] चाहिये कि [illegible]

शकुन्तला को [illegible]

(सब चलते हैं)

[illegible] देत नहिं देत ॥
[illegible] भूमि म[illegible] गिरे न ठोकर खाय ।
[illegible] मारग में आय ॥

[illegible] —[illegible] कि प्यारे जनों को पहुँचाने [illegible] जाना चाहिये जहाँ तक जलाशय न [illegible] का तट आ गया आप हमें [illegible] का सिधारो ।

[illegible] की छाया में ठैर लें।

[illegible] के नीचे रहते हैं) [illegible]

[illegible] के योग्य कथा [illegible]

[सोचता है]

[illegible] जलकी कारन,
[illegible] बिना आतुर
[illegible]

[illegible]

[illegible] हमारी
[illegible]

कण्व—

चौपाई।

आनि भले हम को तपधारी। अपनेहू कुल उच्च विचारी॥
अरु जो बन्धु उपाय विनाहीं। भई प्रीति याकी तो माहीं॥
उचित होइ ताको नरनाहू। सब रानिन सम राखे याहू।
और जु अधिक भागि बस भोगू। वधू बन्धुजन कहन न जोगू॥

शार०—यह सन्देशा मैं ने भली भांति गांठ बांध लिया है।

कण्व—बेटी, अब तुझे भी कुछ सीख दूँगा क्योंकि बनवासी हो कर भी हम लोग लौकिक व्यौहारों को जानते हैं।

शारंग०—विद्वान पुरुषों से क्या छिपा है।

कण्व—बेटी, अब तू यहां से जा कर पतिकुल में पहुँचे तब—

चौपाई।

शुश्रूसा गुरुजन की कीजो। सखी भाव सौतिन में लीजो॥
भरता यदपि करे अपमाना। कुपित होय गहियो जिन माना॥
मिठभाषिनि दासिन संग रहियो। बड़े भागि पै गर्ब न लहियो॥
या विधि तिय गेहिनि पद पावैं। उलटी चलि कुल दोष कहावैं॥

कहो गोतमी यह शिक्षा कैसी है।

गौतमी—कुल बधुओं के लिये यह उपदेश बहुत श्रेष्ठ है। पुत्री इसे ध्यान में रखियो।

कण्व—बेटी, आ मुझ से और अपनी सखियों से मिल ले।

शकु०—हे पिता, क्या प्रियम्वदा अनसूया यहीं से लौट जायँगी।

१६ — प्रकृति—परिदर्शन

संसार के जितने काम हैं, सब अपनी अपनी ऋतु और अपने अपने समय पर होते हैं। फूलों के खिलने का जो समय है उस में दो चार दिन की देर सवेर चाहे भले हो जाय, परन्तु वे खिलते ज़रूर हैं। कलियाँ लगने और नई पत्तियाँ आने की भी यही बात है। जब पतझड़ का समय आता है, कोई पेड़ चार दिन पहले पत्र-शून्य हो जाता है और कोई पीछे। वसन्त ऋतु वनस्पति की जागृति का समय है। देखते देखते बाग़ बगीचे हरे भरे पत्र-पुष्पों से भर जाते हैं। चैत में खेतियाँ पक जाती हैं और सूख जाती हैं। जाड़े के दिन प्रकृति के शयन के दिन हैं। समझ लो कि उसे नींद ने सताया। अनेक जीव गहरी निद्रा में पड़ जाते हैं। नवम्बर तो वन की देखुधी में ही शुरू होता है। अनेक जंगली जीवों के लिए ये दिन महा कष्ट के हैं। इसी कारण पशुओं की मृत्यु हो जाती है। जो जीव इन दिनों के लिए भोजन नहीं भर रखते, वे भी मर जाते हैं।

जिन पशु पक्षियों की रक्षा का भार मनुष्य ले लेता है, उन्हें जाड़ों की कुछ फ़िक्र नहीं, क्योंकि वे जिस के आश्रित हैं वह उन के लिये खान-पान और उचित स्थान तैयार रखता है। भेड़-बकरियाँ जाड़े के दिनों में चौड़े मैदान में पड़ी रहें तो कुछ हर्ज नहीं, क्योंकि उन की रक्षा के लिए सर्दियों में गरम और

[illegible]

[illegible] में [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] है

[illegible]